बी.एच.आई.सी.-106: आधुनिक पश्चिम का उदय-I

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: **बी.एच.आई.सी.-106**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी -106/**ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./**2026-2027**
अधिकतम अंक: **100**

नोट: यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) सामंतवाद से पूंजीवाद में संक्रमण पर वाद-विवाद के संदर्भ में मौरिस डॉब व गाइ बोइस (Guy Bois) के विचारों पर चर्चा कीजिए। 20

2) 15वीं शताब्दी की खोज-यात्राएँ यूरोपीय अन्वेषण तथा उपनिवेशीकरण का एक हिस्सा थीं। चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) प्रारंभिक बाग़ान अर्थव्यवस्थाओं की प्रकृति पर चर्चा कीजिए। 10

4) प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में मुद्रण संस्कृति के उदय पर चर्चा कीजिए। 10

5) प्रारंभिक आधुनिक यूरोप पर वाणिज्यिक क्रांति के प्रभाव की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) पुनर्जागरण 6

7) प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में मूल्य-वृद्धि 6

8) व्यापार व सामंतवाद के पतन पर पॉल स्वीज़ी के विचार 6

9) प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में ''कॉलिंग'' की अवधारणा 6

10) पश्चिमी निरंकुशता की विशेषताएँ 6

1) सामंतवाद से पूंजीवाद में संक्रमण पर वाद-विवाद के संदर्भ में मॉरिस डॉब व गाइ बोइस (Guy Bois) के विचारों पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर :

सामंतवाद से पूँजीवाद में संक्रमण यूरोपीय इतिहास का केंद्रीय प्रश्न है। मध्ययुग में भूमि, कृषक श्रम, सामंती अधिकार तथा लगान पर आधारित उत्पादन संबंध विद्यमान थे; आधुनिक युग में बाजारोन्मुख उत्पादन, निजी पूँजी, मजदूरी पर काम और लाभ के लिए निवेश का महत्त्व बढ़ा। इतिहासकारों के बीच विवाद यह है कि यह परिवर्तन मुख्यतः सामंतवाद की आंतरिक कमजोरियों से हुआ या बढ़ते व्यापार और नगरों जैसे बाहरी दबावों से। मॉरिस डॉब तथा गाइ बोइस ने इस प्रश्न को वर्ग-संबंधों और उत्पादन व्यवस्था के भीतर मौजूद अंतर्विरोधों से समझाने का प्रयास किया।

संक्रमण-विवाद की पृष्ठभूमि। मॉरिस डॉब की पुस्तक *Studies in the Development of Capitalism* (1946) ने बहस को नया रूप दिया। उनके आलोचक पॉल स्वीजी ने लंबी दूरी के व्यापार और विनिमय अर्थव्यवस्था को सामंतवाद के विघटन में अधिक निर्णायक माना। इसके विपरीत डॉब का आग्रह था कि व्यापार अपने-आप किसी उत्पादन-पद्धति को पूँजीवादी नहीं बना देता। यदि भूमि पर अधिकार, अधिशेष की वसूली और श्रमिक की स्थिति सामंती बनी रहती है तो बाजार बढ़ने पर भी सामंती शोषण बढ़ सकता है। इसी संदर्भ में बाद के इतिहासकार गाइ बोइस ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विस्तृत ऐतिहासिक आँकड़ों के आधार पर आंतरिक-संकट की व्याख्या प्रस्तुत की।

मॉरिस डॉब : सामंती उत्पादन संबंधों की भूमिका। डॉब के अनुसार सामंतवाद केवल स्थानीय उत्पादन या आत्मनिर्भर ग्रामीण व्यवस्था नहीं था। उसका मूल तत्व यह था कि किसान की उपज और श्रम के एक हिस्से पर सामंत राजनीतिक तथा गैर-आर्थिक दबाव द्वारा अधिकार करता था। बेगार, लगान और तरह-तरह के देय किसान की उपलब्ध अधिशेष उपज को सीमित करते थे। इसलिए सामंतवाद के संकट का विश्लेषण किसानों और सामंतों के परस्पर संबंध से शुरू होना चाहिए, केवल व्यापार की मात्रा से नहीं।

अत्यधिक शोषण और संकट। सामंत अपनी प्रतिष्ठा, युद्ध और खर्चों की पूर्ति के लिए किसानों से अधिक कर तथा श्रम लेने की कोशिश करते थे। इससे किसान की उत्पादन बढ़ाने की क्षमता और रुचि प्रभावित होती थी। भारी शोषण, भूमि की सीमाएँ तथा ग्रामीण असंतोष ने व्यवस्था को कमजोर किया। अनेक स्थानों पर किसानों ने प्रतिरोध किया, पलायन किया या पुराने दायित्वों को बदलवाया। डॉब के लिए ऐसे संघर्ष किसी बाहरी घटना का गौण प्रभाव नहीं बल्कि उत्पादन संबंधों का अंतर्निहित विरोध थे।

व्यापार और नगरों की सीमित स्वायत्त भूमिका। डॉब ने नगरों, मुद्रा और व्यापार के बढ़ते महत्त्व को स्वीकार किया; किंतु उन्होंने इनके प्रभाव को भिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग माना। पश्चिमी यूरोप के कुछ क्षेत्रों में धन-रूप लगान, स्वतंत्र किसान और बाजारोन्मुख उत्पादन बढ़े। दूसरी ओर, पूर्वी यूरोप में अनाज की अंतरराष्ट्रीय मांग के साथ कई जमींदारों ने किसानों की निर्भरता तथा बंधुआ श्रम को कठोर बनाया। इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि वाणिज्य का विकास हमेशा पूँजीवाद की दिशा में सीधी गति नहीं देता। निर्णायक प्रश्न यह है कि बाजार का लाभ कौन उठाता है और उत्पादन में नियंत्रण किसके पास रहता है।